23/1/67 की प्रातः क्लास की प्वाइंट्स :– बाप को और सृष्टि–चक्र को याद करना है। गीता में शुरू में और फिर पिछाड़ी में है मनमनाभव। कुछ ना कुछ आटे में लून है। मुख्य बात है यह माम् एकम् याद करो। इनको ही योगाग्नि कहा जाता है। भगवान है ज्ञान का सागर। मनुष्य हैं शास्त्रों के सागर। बाप शास्त्र तो नहीं सुनावेंगे ना। वो भी शास्त्र सुनावें तो बाकी भगवान और मनुष्य फर्क ही क्या रहा! बाप कहते हैं इन भक्तिमार्ग के शास्त्रों का सार मैं तुमको सुनाता हूँ। मुरली बजाने वाले सर्प को पकड़ते हैं तो उनके दांत निकाल देते हैं। बाप भी विख पिलाना तुमसे छुड़ा (देते) हैं। इस विख से ही मनुष्य पतित बनते हैं। ओम।